दिवाकर चित्रकथा

अंक ४०

मूल्य १७.००

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

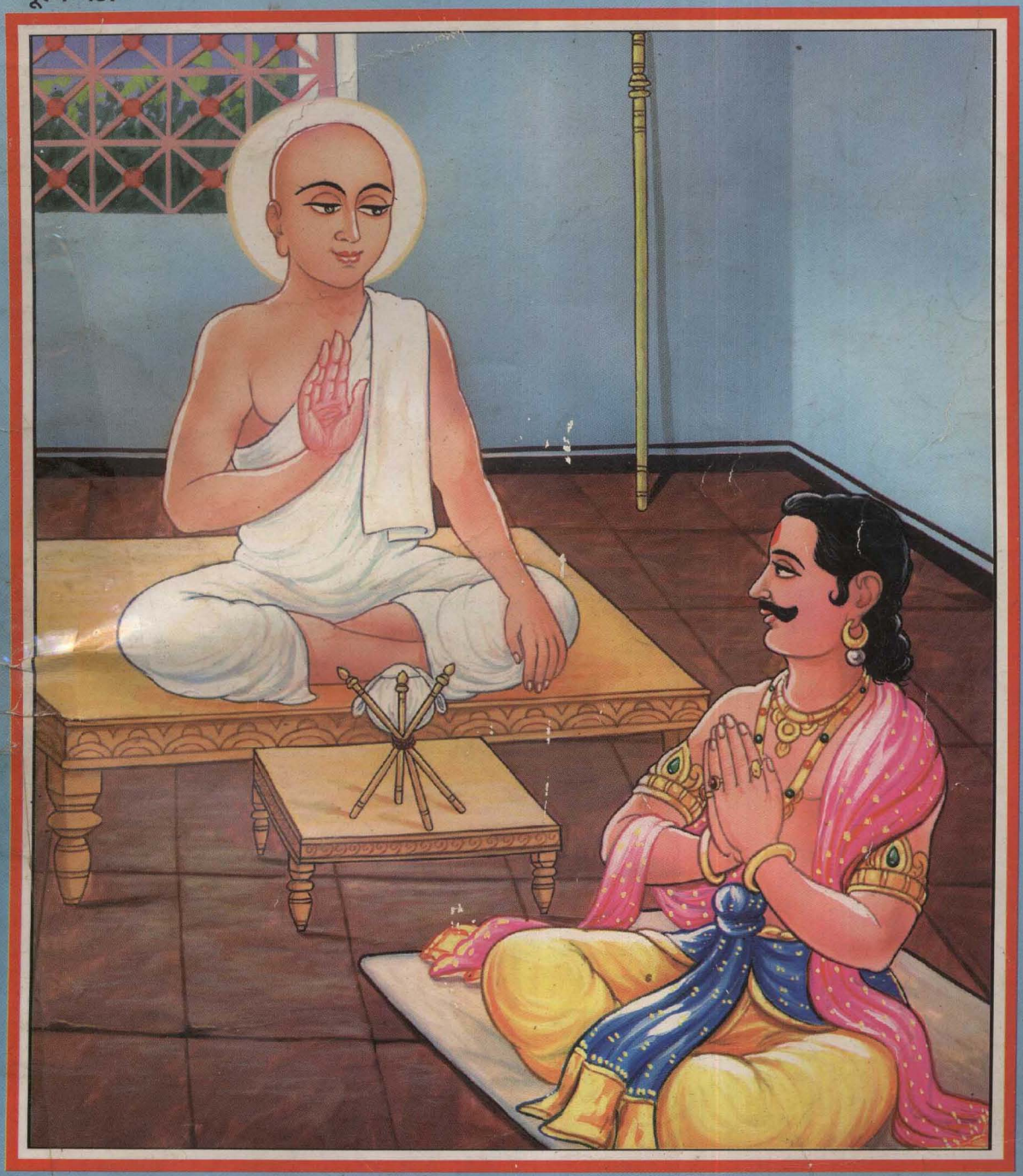

सुसंस्कार निर्माण | विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि | मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य

भगवान महावीर के पश्चात जैन परम्परा में अनेक प्रभावशाली विद्यासिद्ध लोकोपकारी महान आचार्य हुए जिनमें आचार्यश्री हेमचन्द्र सूरि का नाम स्वर्ण अक्षरों में मंडित है।

आचार्यश्री हेमचन्द्र सूरि असाधारण विभूतियों से सम्पन्न महामानव थे। वे उत्कृष्ट श्रुत पुरुष थे। व्याकरण-कोष-न्याय-काव्य छन्दशास्त्र-योग-तर्क-इतिहास आदि विविध विषयों पर अधिकारिक साहित्य का निर्माण कर सरस्वती के भण्डार को अक्षय श्रुत निधि से भरा था। वे ज्ञान के महासागर थे। साथ ही उन्होंने गुजरात के राजा सिद्धराज और कुमारपाल को जैनधर्मानुरागी बनाकर जिनशासन के गौरव में चार चांद लगाये। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में नवचेतना जगाई। उनकी बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए गुर्जर नरेश कुमारपाल ने उन्हें **'कलिकाल सर्वज्ञ'** के विरुद से अलंकृत किया। शिवभक्त राजा सिद्धराज उनकी विद्वत्ता, नीतिज्ञता, निस्पृहता, धार्मिक सहिष्णुता, उदारता और समन्वयशीलता का सदा ही सन्मान करते थे। संपूर्ण पश्चिमी भारत में अहिंसा के प्रचार में आचार्यश्री का योगदान अद्वितीय माना जाता है। साथ ही कला, साहित्य, संस्कृति के अभ्युदय में उनका योगदान शताब्दियों तक जीवंत रहेगा। उनका समय गुजरात राज्य के बहुमुखी उत्कर्ष का समय था।

आचार्यश्री के विराट व्यक्तित्व का चित्रण पृष्ठों की संख्या सीमित होने के कारण एक भाग में सम्भव नहीं हो सका है। इसलिए उनका चरित्र दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। दूसरा भाग भी इसके साथ ही शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

अनेक ग्रंथों व प्रचलित कथाओं के आधार पर प्रस्तुत चित्रकथा में सार रूप में आचार्यश्री एवं महाराज कुमारपाल के जीवन की प्रेरणाप्रद महत्वपूर्ण घटनाओं को चित्रित करने का प्रयास किया है आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरि जी म. ने। हम आपके आभारी हैं।

—महोपाध्याय विनय सागर **श्रीचन्द सुराना "सरस"**

लेखक : आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरि.

सम्पादक : मुनि चिदानंद विजय *सह-सम्पादक : श्रीचन्द सुराना "सरस"*

प्रबंध सम्पादक : संजय सुराना *चित्रांकन : श्यामल मित्र*

प्रकाशक

दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. दूरभाष : 351165

सचिव, प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. दूरभाष : 524828, 561876, 524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

आत्म-वल्लभ एंटरप्राइजेज, लुधियाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य

गुजरात के धंधुका नगर में चाचिग नाम का एक सेठ रहता था। उसकी पत्नी थी पाहिनी देवी। एक रात पाहिनीदेवी ने स्वप्न देखा–

दो सुन्दर हाथ उसकी तरफ बढ़ रहे हैं

पाहिनी ! ले मैं तुझे एक दिव्य रत्न दे रही हूँ।

पाहिनी वह रत्न लेकर गुरुदेव श्री देवचन्द्रसूरी के पास जाती है–

पाहिनी ने दोनों हाथ बढ़ाये, देवी ने उसकी हथेली पर रत्न रख दिया।

गुरुदेव आप यह रत्न ग्रहण कीजिए।

गुरुदेव ने पाहिनी से रत्न ग्रहण कर लिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रातः एक पड़ोसन ने आकर कहा–

पाहिनी बहन, सुना है, आचार्यश्री देवचन्द्र सूरि जी नगर में पधारे हैं। दर्शन करने चलोगी न ?

हाँ-हाँ, ठहरो, अभी तैयार होती हूँ।

पाहिनी उपाश्रय में आई। आचार्यश्री के दर्शन कर उसने रात के स्वप्न की बात कही। आचार्यश्री कुछ विचार कर बोले–

बहन ! तुम्हें एक श्रेष्ठ रत्न जैसा पुत्र प्राप्त होगा। तुमने वह रत्न मुझे दिया है, इसका अर्थ है, तुम मुझे शिष्य भिक्षा दोगी।

समय पर पाहिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया। चाचिग सेठ ने पुत्र का जन्म महोत्सव मनाया। बुआ ने नाम रखा–

इस बालक को चंगदेव कहेंगे।

देखो, बालक का मुखड़ा कैसा चाँद सा चमक रहा है।

वि. सं. ११४५ कार्तिक शुक्ल १५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

106761
gyanmandir@kobatirth.org

...र चंगदेव को पाठशाला भेजा... ...र विवेक देखकर गुरुजी प्रसन्न हो गये। बोले–

सेठ तुम्हारा पुत्र एक दिन कोई महापुरुष बनेगा। इस छोटी-सी उम्र में ऐसा विवेक और इतना विनय?

एक दिन माता के साथ चंगदेव श्री देवचन्द्र सूरि के दर्शन करने गया। वे मन्दिर में भगवान की प्रदक्षिणा कर रहे थे। पाहिनी भी खड़ी-खड़ी परमात्मा की स्तुति करने लगी। तभी शरारती चंगदेव जाकर गुरुदेव के आसन पर बैठ गया।

गुरुदेव और पाहिनी की नजर उस पर पड़ी तो चंगदेव खिलखिलाकर हँस पड़ा। आचार्यश्री भी हँसते हुए बोले–

बहन ! तुझे अपना स्वप्न याद है? देख, तेरा लाड़ला खुद ही मेरे आसन पर बैठ गया है। अब इसे हमें सौंप दे।

पाहिनी मौन रही।

एक दिन गुरुदेव ने चाचिग सेठ से कहा–

सेठ, तुम्हारा पुत्र बहुत भाग्यशाली होगा।

गुरुदेव, आपकी वाणी सत्य हो।

सेठ, हमारा वचन सत्य करने के लिए तुम्हें भी मोह त्यागना पड़ेगा। वह हीरा है, जौहरी के हाथ में देना होगा। बोलो....

गुरुदेव, मैं पहले चंगदेव से भी पुछूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन चंगदेव के साथ चाचिग भोजन कर रहा था। उसने चंगदेव से पूछा–

बेटा, तुझे गुरुदेव अच्छे लगते हैं?

बहुत अच्छे लगते हैं। मन होता है मैं उनके पास ही रहूँ।

वहाँ माँ नहीं मिलेगी, पढ़ाई करनी पड़ेगी, नंगे पाँव चलना पड़ेगा।

पिताजी ! माँ कहती है, बिना कष्ट पाये भगवान नहीं मिलते हैं। मैं सब कष्ट सहकर भी भगवान को पाना चाहता हूँ।

अगले दिन चाचिग सेठ चंगदेव को लेकर देवचन्द्र सूरि के पास आया–

गुरुदेव ! इसका मन आपके पास ही लगता है। इसे आप अपनी शरण में रख लें।

चंगदेव देवचन्द्र सूरि के पास रहने लगा।

चंगदेव को साथ लिए गुरुदेव खंभात नगर में पधारे। एक दिन गुजरात का महामंत्री उदयन गुरुदेव के दर्शन करने आया। चंगदेव को पढ़ते देखकर पूछा–

गुरुदेव, यह बालक कौन है? इतनी छोटी उम्र में शास्त्र पढ़ रहा है?

मंत्रीश्वर, यह बड़ा ही होनहार बालक है। धंधुका के चाचिग सेठ का पुत्र है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्या यह दीक्षा लेगा?

यदि दीक्षा ले तो इसका दीक्षा महोत्सव तुम करोगे?

महामंत्री हर्षित होकर बोले–

गुरुदेव ! मेरा अहोभाग्य। यह सौभाग्य मुझे ही मिलना चाहिए।

और एक दिन खूब धूमधाम से चंगदेव को दीक्षा प्रदान की गई।#

आज से यह मुनि सोमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध होगा।

लगभग दस वर्ष पश्चात् एक दिन आचार्यश्री अपने शिष्यों के साथ ज्ञानचर्चा कर रहे थे। आचार्यश्री ने बताया–

गणधर गौतम स्वामी सर्वविद्या सम्पन्न थे। एक-एक शब्द के असंख्य अर्थ और एक-एक अर्थ के असंख्य पर्याय का ज्ञान था उन्हें।

वि. सं. ११५४ माघ सुदि १४ दिन शनिवार, उम्र ९ वर्ष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि सोमचन्द्र ने पूछा–

गुरुदेव ! क्या अब ज्ञान का वैसा प्रकाश नहीं मिल सकता?

मिल सकता है, परन्तु बहुत कठिन साधना चाहिए।

गुरुदेव, मुझे साधना का मार्ग बताइए। मैं ज्ञान के सागर में गोता लगाना चाहता हूँ।

वत्स ! कश्मीर में सरस्वती देवी का शक्तिपीठ है। वहाँ जाकर सरस्वती की आराधना की जाये तो तुम्हारा मनोरथ सफल हो सकता है।

मुनि सोमचन्द्र कुछ देर तक विचार करते रहे–

ज्ञान प्राप्ति के लिए तो पूरा जीवन ही समर्पित कर सकता हूँ। फिर कश्मीर कितना दूर है?

गहरे विचार मन्थन के बाद मुनि सोमचन्द्र ने गुरुदेव से निवेदन किया–

गुरुदेव, श्रुत देवी सरस्वती की आराधना के लिए कश्मीर जाने की मेरी इच्छा है। आशीर्वाद प्रदान कीजिए।

वत्स ! मेरी कल्पना में तेरा उज्ज्वल भविष्य झलक रहा है। तेरे हाथों जिन शासन और श्रुत ज्ञान की अपार महिमा फैलेगी।

गुरुदेव के बताये शुभ मुहूर्त में मुनि सोमचन्द्र एक अन्य सहायक मुनि के साथ कश्मीर यात्रा के लिए चल पड़ा। यात्रा करते हुए दोनों मुनि खंभात नगर आये।#

खंभात ही प्राचीन स्तंभन तीर्थ कहलाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंभात के बाहर 'उज्जयन्तावतार' नामक एक अति प्राचीन जिनालय था। दोनों मुनियों ने इसी जिनालय के समीप धर्मस्थान में विश्राम किया। रात्रि के शान्त वातावरण में मुनि सोमचन्द्र के मन में एक कल्पना उठी–

मुनि सोमचन्द्र शुद्ध वस्त्र पहनकर जिनालय में आये। और भूमि पर आसन बिछाकर ध्यानस्थ हो गये।

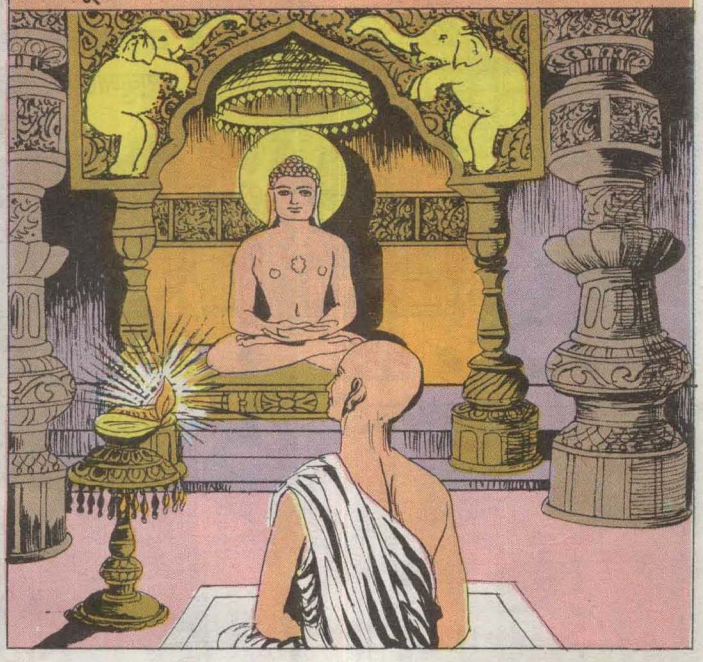

मध्य रात्रि के समय देवी सरस्वती प्रकट हुई–

और देवी अदृश्य हो गई।

मुनि सोमचन्द्र के चेहरे पर तेज चमक उठा। हृदय में हर्ष उछल रहा था। अपने साथी मुनि के साथ वापस गुरुदेव के पास लौट आये।

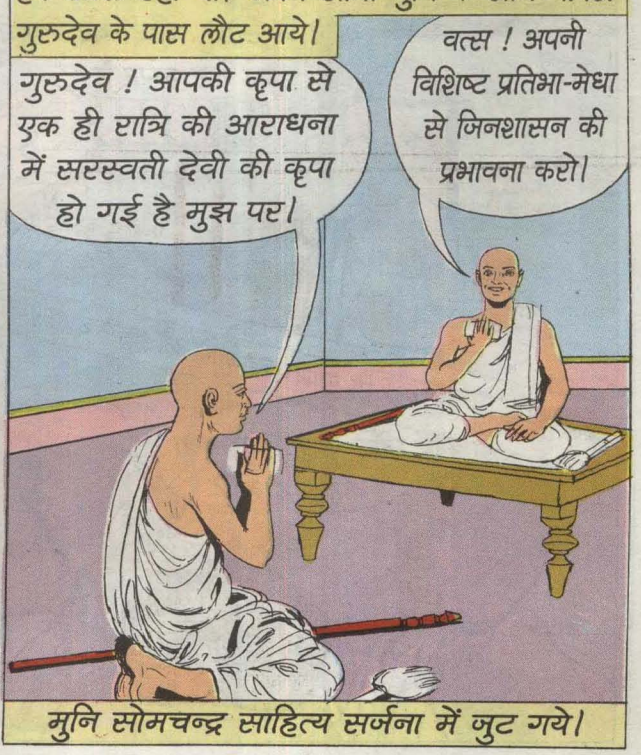

मुनि सोमचन्द्र साहित्य सर्जना में जुट गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक बार आचार्य देवचन्द्र सूरि अपने शिष्यों के साथ नागपुर पधारे। मुनि सोमचन्द्र, वीरचन्द्र मुनि के साथ भिक्षा के लिए निकले। एक विशाल हवेली में भिक्षा के लिए गये। हवेली के विशाल आँगन में सेठ का परिवार चार पुत्र, चार पुत्र वधुएँ, पोता-पोती, सेठ धनद और सेठानी यशोदा आदि बैठे हुए पानी में आटा, नमक मिलाकर राब जैसा घोल बनाकर पी रहे थे। मुनि सोमचन्द्र ने देखा और अपने साथी मुनि से पूछा–

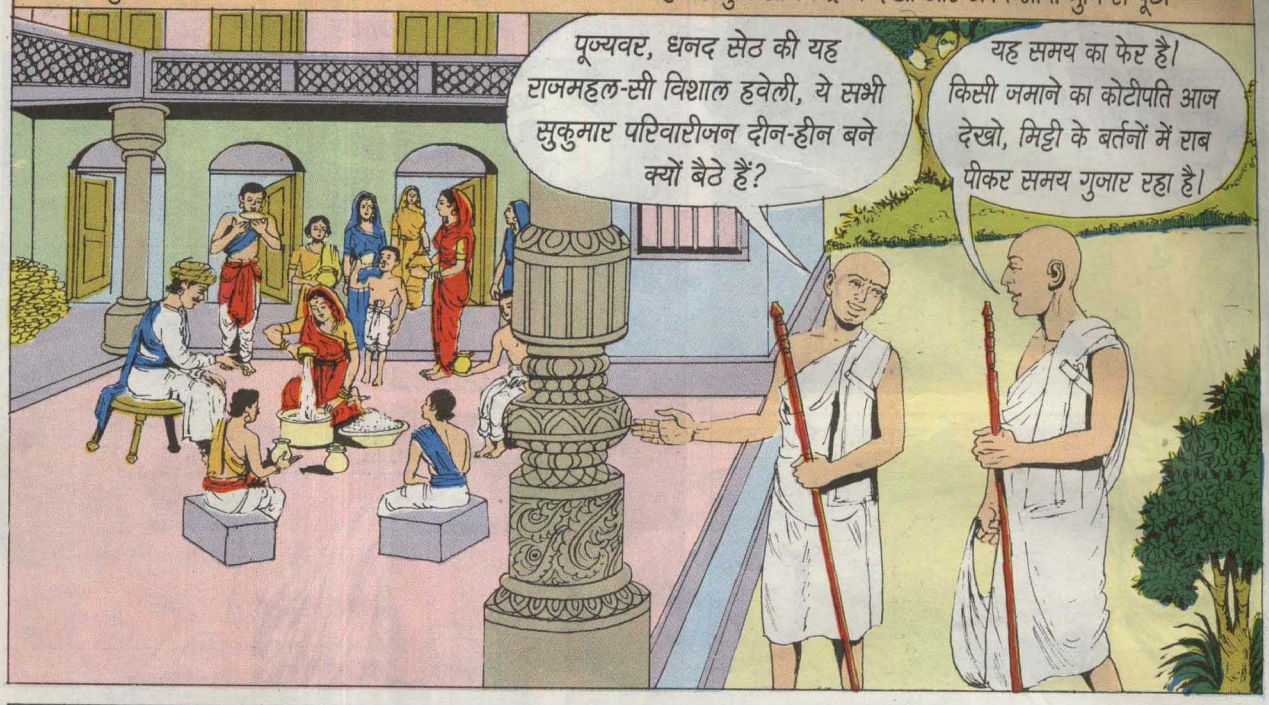

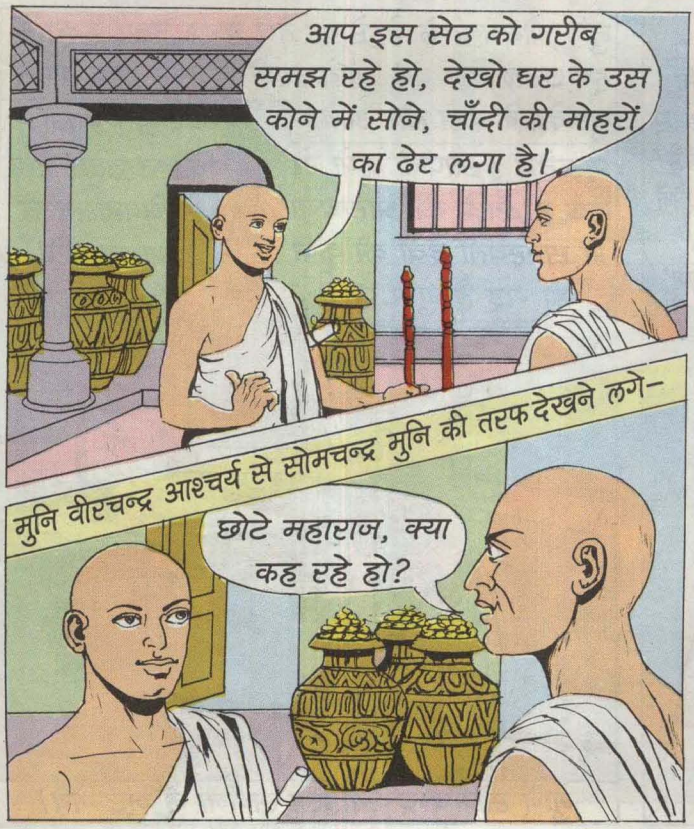

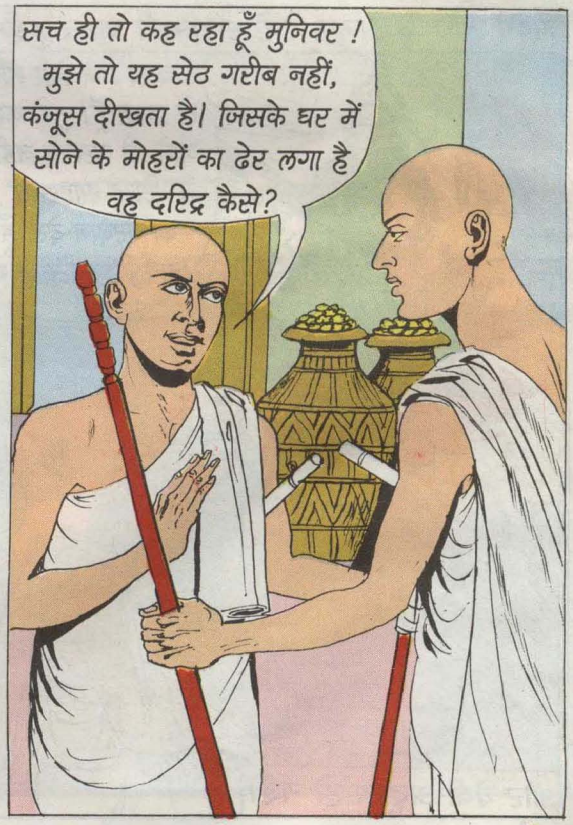

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धनद सेठ ने दोनों मुनियों की बात सुनी तो हाथ जोड़कर पूछा—

महाराज, आप सोने की मोहरों की क्या बात कर रहे थे?

छोटे महाराज पूछ रहे हैं, तुम्हारे घर के कोने में सोने-चाँदी की मोहरों का ढेर लगा है और तुम सब आटे की राब पी रहे हो? यह क्या बात है?

सेठ ने मुनि सोमचन्द्र के पैर पकड़ लिए—

गुरुदेव ! मुझ भाग्यहीन से ऐसा मजाक आप तो न करें। कहाँ हैं मोहरें? वह तो कोयलों का ढेर है।

फिर सेठ ने बताया—

किसी जमाने में मैंने इन घड़ों को सोने-चाँदी की मोहरें भरकर ही भूमि में गाड़ा था परन्तु तकदीर के फेर ने उन सबको कोयला बना दिया। क्या आप इन कोयलों को ही सोना-चाँदी की मोहरें बता रहे हैं?

मुनि वीरचन्द्र बोले—

सेठ, तुम्हारा दुर्भाग्य आज विदा हो गया है। मुनि सोमचन्द्र की दृष्टि पड़ते ही वह कोयला फिर सोना हो गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेठ अन्दर देखने आया। घड़ों में सोने-चाँदी की मोहरें भरी थीं।

सेठ ने बाहर आकर मुनियों के पाँव पकड़ लिए।

सेठ दोनों मुनियों के साथ उपाश्रय में आया।

गुरुदेव ! आपके शिष्य की अमृत दृष्टि के प्रभाव से कोयला बनी मेरी मोहरें फिर से सोना बन गईं।

सेठ ! साधना का ऐसा ही प्रभाव होता है।

अब आज्ञा करें, मैं इस स्वर्ण का कहाँ उपयोग करूँ?

धर्म के प्रभाव से पुण्य बढ़ता है, पुण्य प्रभाव से धन मिलता है। इसलिए धर्म-प्रचार में धन का सदुपयोग करो।

धनद सेठ ने उस स्वर्ण के एक भाग से भगवान महावीर स्वामी का जिन प्रासाद बनवाया।

इसके पश्चात् आचार्य देवचन्द्र सूरि विहार करते हुए पाटन पधारे। एक दिन एक वृद्ध पुरुष ने आकर आचार्यश्री को वन्दना की।

महाराज, गौड देश में आजकल बड़े-बड़े मंत्रवादी, विद्यासिद्ध, महापुरुष हैं। आप भी वहाँ पधारिये। इससे प्रजा का कल्याण होगा।

उसके चले जाने के बाद मुनि सोमचन्द्र ने आचार्यश्री से निवेदन किया–

गुरुदेव, आप आज्ञा दें तो मैं गौड देश में जाना चाहता हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री–

हाँ, मुझे लगता है, तुम्हें वहाँ विशेष लाभ होगा।

गुरुदेव की आज्ञा लेकर मुनि सोमचन्द्र अपने साथी देवेन्द्रसूरि जी के साथ गौड देश के लिए चल पड़े। कुछ दिनों की यात्रा के बाद दोनों मुनि खेरालु पहुँचे। रात भर उपाश्रय में विश्राम किया। अगले दिन साँझ ढलते समय एक भव्य शरीर धारी वृद्ध पुरुष वहाँ आया। उसकी आँखों में बड़ा तेज था। चेहरे पर शान्त प्रसन्नता। उसने पूछा–

महात्मन ! क्या मैं रातभर आपके पास रुक सकता हूँ?

मुनि सोमचन्द्र ने दो पल गौर से उस वृद्ध पुरुष को देखा, फिर बोले–

महात्मन ! आप हमारे साथ रहेंगे तो हमें भी आनन्द अनुभव होगा।

फिर उन्होंने देवेन्द्रसूरि से कहा–

मुझे तो यह कोई विद्यासिद्ध महापुरुष लगता है।

हाँ, मुझे भी यही लगता है।

वृद्ध पुरुष ने पूछा–

आप लोग कहाँ जा रहे हैं?

हम विशिष्ट विद्या प्राप्ति के लिए गौड देश जा रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृद्ध पुरुष–

आपको इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है? मेरे पास सभी विद्याएँ हैं। आप जैसे योग्य पात्र को विद्या देकर मेरा मन सन्तुष्ट होगा। बस, आप मुझे गिरनार तीर्थ पर ले चलो।

ठीक है, हम प्रातःकाल गिरनार की तरफ ही प्रस्थान करेंगे।

अगले दिन प्रातः उठे तो उन्हें एक विचित्र ही दृश्य दिखाई दिया। ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर, हरे-भरे वृक्ष, शीतल पवन चल रही है। मुनि सोमचन्द्र ने कहा–

महाराज, हम कहाँ आ गये? क्या कोई विद्या शक्ति हमें यहाँ ले आई? और वे वृद्ध पुरुष कहाँ चले गये?

मुझे लगता है हम गिरनार पर्वत पर आ पहुँचे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तभी एक दिव्य प्रकाश पुंज के साथ देवी प्रकट हुई। दोनों मुनि चकित होकर यह अद्‌भुत दृश्य देख रहे थे।

तभी देवी बोली–

मैं शासन देवी हूँ। तुम्हारे उत्कृष्ट पुण्य प्रभाव के कारण मैं ही तुम्हें यहाँ ले आई हूँ। भगवान नेमिनाथ की यह निर्वाण भूमि है। मैं तुम्हें कुछ मंत्र व दिव्य औषधियाँ दूँगी। तुम उन्हें स्मरण रखना। इन मंत्रों के प्रभाव से तुम सर्वत्र जैन धर्म की प्रभावना तथा भक्तों की रक्षा कर सकोगे।

शासन देवी ने दोनों को मंत्र आदि दिये। मुनि सोमचन्द्र ने उन मंत्रों को सिद्ध कर लिया। देवेन्द्र सूरि कुछ दिन याद रखने के पश्चात् वह मंत्र भूल गये। दोनों मुनि पाटन लौट आये।

एक बार आचार्यश्री ने पाटन संघ को एकत्र करके कहा–

मुनि सोमचन्द्र जैसा प्रभावशाली जिनशासन की बहुत प्रभावना कर सकता है। मैं इन्हें आचार्य पदवी से अलंकृत करना चाहता हूँ।

अवश्य गुरुदेव; आपका विचार अति उत्तम है।

सम्पूर्ण संघ ने बड़े उत्साह के साथ आचार्य पद महोत्सव मनाया। हजारों भक्तों की उपस्थिति में आचार्यश्री देवचन्द्र सूरि ने घोषणा की–

मुनि सोमचन्द्र चन्द्रमा की तरह निर्मल कान्ति वाला और 'हेम' (स्वर्ण) की भाँति जिन शासन की शोभा बढ़ाने वाला है। अतः आज से सोमचन्द्र मुनि आचार्य हेमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध होंगे।

एक साथ हजारों कण्ठों से गूँज उठा–'नूतन आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि की जय।'#

आचार्य पद वि. सं. ११६६ वैशाख शुक्ल ३ अक्षय तृतीया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्हीं दिनों पाटन में चौलुक्य राजवंश का एक शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी राजा गुर्जरेश्वर जयसिंह सिद्धराज आसपास के प्रदेशों को जीतकर अपना प्रभुत्व बढ़ाता जा रहा था। उसने मालवराज यशोवर्मन को भी जीतकर अपने आधीन कर लिया था। राजधानी पाटन में विजयोत्सव मनाया जा रहा था। इस अवसर पर सिद्धराज ने आचार्यश्री हेमचन्द्र सूरि को आशीर्वाद प्रदान करने सादर आमन्त्रित किया। राजसभा में अनेक राजाओं, सामन्तों के अलावा सभी धर्मों के प्रमुख साधू-सन्त पधारे। अनेक राजा सामन्तों ने सिद्धराज को विविध मूल्यवान उपहार भेंट किये। सामने धारा नगरी (मालव) से प्राप्त हीरे, मोती आदि मूल्यवान वस्तुएँ तथा राजा भोज के ज्ञान भण्डार के अनेक स्वर्ण लिखित ग्रन्थ भी रखे थे। राजा सिद्धराज ने कहा–

मालवदेश की कला, संस्कृति और साहित्य बहुत ही उच्चकोटि का रहा है। हमारा गुजरात शौर्य और समृद्धि में किसी से कम नहीं है, परन्तु मैं चाहता हूँ गुजरात का साहित्य और कला वैभव इससे भी बढ़ा-चढ़ा हो। क्या यह सम्भव है?

राजा ने एक पुस्तक हाथ में लेकर बताया–

यह राजा भोज द्वारा निर्मित संस्कृत व्याकरण है। "सरस्वती कंठाभरण।" क्या गुजरात का कोई विद्वान् ऐसी व्याकरण रचना कर सकता है?

सभी विद्वान् एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। सन्नाटे को तोड़ते हुए हेमचन्द्राचार्य ने कहा–

राजन् ! गुजरात में भी विद्वानों की कमी नहीं है। मैं इससे भी श्रेष्ठ व्याकरण रचना कर सकता हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धराज का चेहरा खिल उठा—

अवश्य गुरुदेव ! आप सर्व समर्थ हैं। ऐसी कृति तैयार होने से मेरा यश, आपकी ख्याति और जनता का उपकार होगा।#

परन्तु राजन् ! इसके लिए सहायक ग्रन्थों की जरूरत पड़ेगी?

आपको राज्य की ओर से सभी साधन उपलब्ध कराये जायेंगे, आज्ञा कीजिए।

काश्मीर संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा है। वहाँ के ज्ञान भण्डारों से अब तक उपलब्ध सभी व्याकरणों की प्रतियाँ मँगाई जायें।

राजा के आदेश से कुछ विद्वान काश्मीर गये। वहाँ से आठ विशाल व्याकरण ग्रन्थ लेकर आये। हेमचन्द्राचार्य नये व्याकरण की रचना में जुट गये।

एक वर्ष पश्चात् एक श्रावक सिद्धराज के पास आया—

महाराज ! आचार्यश्री ने एक वर्ष तक कठिन परिश्रम करके नये व्याकरण की रचना कर ली है।

वाह ! इतने अल्प समय में। क्या नाम रखा व्याकरण का।

यशो मम तवख्यातिः पुण्यं च मुनिनायक !
विश्वलोकोपकाराय कुरु व्याकरण नवम् !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री ने "सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन" नाम सूचित किया है। लगभग सवा लाख श्लोक हैं उसके।

राजा ने आदेश दिया–

सम्मान पूर्वक ग्रन्थ राजसभा में लाया जाय।

राजा के आदेशानुसार पट्ट हस्ती पर सोने का सिंहासन रखा गया। उस पर मोतियों का छत्र लगाया। स्वर्ण थाल में व्याकरण ग्रन्थ रखकर। दोनों तरफ दो युवतियाँ चंवर ढुलाने लगीं। हजारों स्त्री-पुरुषों के जुलूस के साथ ग्रन्थ राजसभा में पहुँचा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर राजसभा में घोषणा की–

आचार्य देव ने इस अद्भुत व्याकरण की रचना कर गुजरात के यश को अमर बना दिया है। गुजरात के सभी विद्यालयों में इस व्याकरण का अध्ययन होना चाहिए।'

महाराज ! इसके लिए पहले पण्डित तैयार होने चाहिए और ग्रन्थ की प्रतियाँ भी।

राजा के आदेश से अनेक विद्वानों को व्याकरण पढ़ाया गया और ३०० आलेखकों को नियुक्त कर इसकी प्रतियाँ तैयार कराई गईं।

इस प्रकार एक सुन्दर और समग्र व्याकरण की रचना सम्पन्न हुई। सिद्धराज ने एक-एक प्रति अपने राज्य के प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय के मुख्य धर्माचार्य को भेंट की और शेष भारत वर्ष में सर्वत्र भेजीं। इतना ही नहीं; भारत के बाहर ईरान, लंका और नेपाल में भी प्रतियाँ भेजीं।

भविष्य वाणी

गुर्जरेश्वर सिद्धराज को कोई सन्तान नहीं थी। उसने अनेक तीर्थ यात्राएँ कीं। ज्योतिषियों को पूछा, यंत्र-मंत्र-तंत्र किये फिर भी उसकी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई। एक दिन उसने आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि से अपनी मानसिक वेदना बताई–

गुरुदेव, मुझे पुत्र प्राप्ति होगी या नहीं; तथा मेरे बाद गुजरात का राजा कौन होगा? इस अनबूझ पहेली का समाधान कीजिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री मौन रहे। परन्तु राजा के बार-बार कहने पर वे ध्यानस्थ हुए। अम्बिका देवी की आराधना की। देवी प्रत्यक्ष प्रकट हुई–

मुझे किसलिए याद किया है?

भगवती ! गुर्जरेश्वर सिद्धराज को पुत्र योग है या नहीं?

पूर्व जन्म के सघन पाप कर्मों के कारण उसे सन्तान प्राप्ति नहीं हो सकती।

फिर उसके बाद गुजरात का राजा कौन होगा?

त्रिभुवनपाल का पुत्र कुमारपाल। वह परम शूरवीर भी होगा और परम धार्मिक भी।

आचार्यश्री ने सिद्धराज से कहा–

राजन् ! तुम्हें सन्तान प्राप्ति का योग नहीं है।

गुरुदेव ! फिर मेरे बाद इस राज्य का स्वामी कौन होगा?

देवी वचन के अनुसार त्रिभुवनपाल का पुत्र कुमारपाल इस राज्य का स्वामी होगा।

कौन ! वही कुमार पाल? नहीं ! यह कभी नहीं हो सकता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

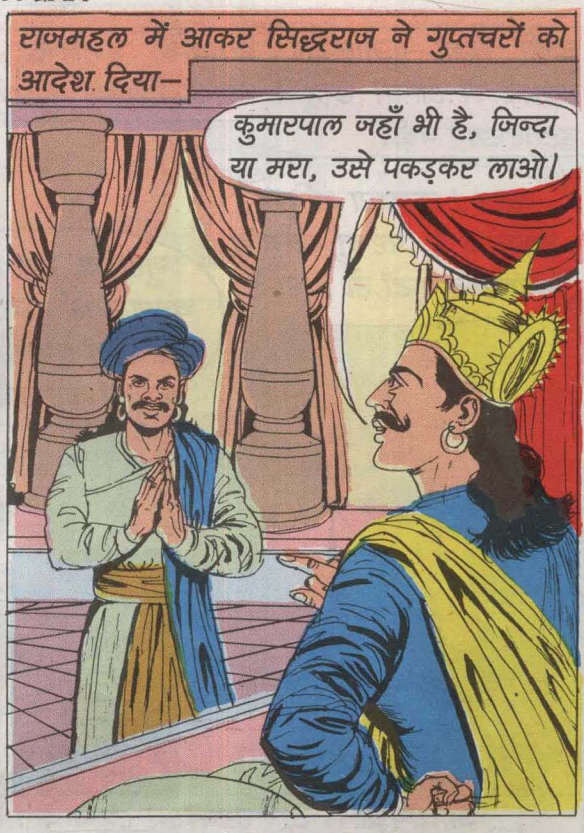

कुमारपाल का परिचय

गुजरात के चौलुक्यवंशी क्षत्रियों में मूलराज नाम के एक पराक्रमी राजा हुए। इनके पश्चात् चामुण्डराय, दुर्लभराज और भीमदेव जैसे शूरवीर, विद्याप्रेमी और दानेश्वेरी राजाओं ने गुजरात के वैभव में चार चाँद लगाये। राजा भीमदेव के दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी का पुत्र क्षेमराज था। छोटी रानी के पुत्र का नाम कर्ण था। क्षेमराज दधिस्थली का तथा कर्ण पाटण का राजा था। कर्ण का पुत्र जयसिंह सिद्धराज पाटण के राजसिंहासन पर बैठा। उधर क्षेमराज का पुत्र देवप्रसाद दधिस्थली का राजा बना। देवप्रसाद के बाद उसका पुत्र त्रिभुवनपाल दधिस्थली के राजसिंहासन पर बैठा।

त्रिभुवनपाल बड़ा शूरवीर और प्रजावत्सल था। त्रिभुवनपाल की पत्नी का नाम था कश्मीरा देवी। वह रूप, गुण, शील की मूर्ति थी। उसके तीन पुत्र थे– महीपाल, कीर्तिपाल और कुमारपाल।

कुमारपाल बचपन से ही बड़ा बुद्धिमान, वीर और साहसी था। साथ ही बड़ा दयालु भी था। वह महत्वाकांक्षी होते हुए भी अपने पर संयम रखना जानता था। खतरों से खेलना, अन्याय, अनीति से संघर्ष करना और प्रजा के दुःख-दर्द दूर करना यह उसका स्वभाव था। भोपलदेवी नाम की राजकुमारी के साथ उसका विवाह हुआ। यद्यपि सिद्धराज और त्रिभुवनपाल के बीच मधुर सम्बन्ध थे। दोनों एक दूसरे के मेहमान भी होते थे परन्तु कुमारपाल बहुत ही स्वाभिमानी था। उसके पराक्रमी, निर्भीक और तेज तर्रार स्वभाव के कारण सिद्धराज मन ही मन उससे सशंकित और भयभीत सा रहता था।

चौलुक्य वंशावली

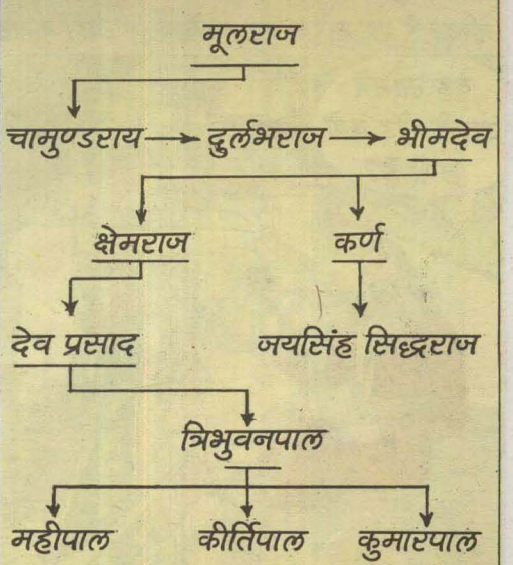

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उन्हीं दिनों कुमारपाल आचार्यश्री हेमचन्द्र सूरि के सम्पर्क में आया। उन्होंने उसकी तेजस्वी मुखमुद्रा और हस्तरेखाएँ पढ़ीं।

वत्स ! तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है, परन्तु वर्तमान भयंकर संकटों से घिरा है।

गुरुदेव, मैंने आपका चरण स्पर्श किया है, अब मुझे कोई तूफान विचलित नहीं कर सकेगा।

आचार्यश्री ने उसे सावधान रहने के लिए कहा।

कुमारपाल जैसे ही अपने स्थान पर वापस आया, उसे सूचना मिली–

कुमार, आपको पकड़ने चारों तरफ सिद्धराज के गुप्तचर घूम रहे हैं।

आचार्यश्री ने मुझे पहले ही सावधान कर दिया था।

कुमारपाल वेष बदलकर अकेला ही जंगलों में निकल गया।

जान मुट्ठी में लिए छुपता-छुपाता जंगल-जंगल भटकता हुआ एक बार खंभात पहुँच गया। वहाँ एक जिनालय के चबूतरे पर बैठ गया। मन्दिर से एक महिला पूजा करके बाहर आई। कुमारपाल ने पूछा–

वह सामने इतनी भीड़ क्यों लगी है?

तुम्हें मालूम नहीं, आचार्य हेमचन्द्र सूरि जी का प्रवचन चल रहा है।

यह सुनकर कुमारपाल को धीरज बँधा। वह चुपके से भीड़ में जाकर बैठ गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचन समाप्त हुआ। जनता चली गई। अकेला कुमारपाल आचार्यश्री के पास आया। आचार्यश्री ने देखा। मैले-कुचैले कपड़ों में लिपटा मिट्टी सना कोई चन्द्रकान्त मणि हो। उनकी पारदर्शी आँखों ने तुरन्त उस तेजस्वी चेहरे को पहचान लिया। आशीर्वाद का हाथ उठा–

धर्मलाभ ! कब आये?

गुरुदेव, धर्मलाभ तो तब करें जब कोई चैन से जी पायें। मैं तो जान मुट्ठी में लिए दर-दर भटक रहा हूँ। सात दिन से पेट में अन्न का एक कण नहीं पहुँचा है। क्या इसी प्रकार दुःखों की आग में जलना ही मेरा प्रारब्ध है?

तभी एक प्रौढ़ व्यक्ति आचार्यश्री के पास आया। आचार्यश्री ने कहा–

कुमारपाल ! इनको पहचानते हो, गुजरात के महामंत्री उदयन।

उदयन नजर गड़ाकर कुमारपाल को पहचानने की कोशिश करता है। आचार्यश्री बोले–

कुमारपाल ! कुछ समय बाद ही तुम गुजरात के राजा बनोगे।

गुरुदेव ! आज तो मेरी दशा एक भिखारी से भी बदतर है। आपका यह वचन असम्भव जैसा लगता है।

कुमार; योगी पुरुषों का वचन कभी असत्य नहीं होता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर उन्होंने अपने शिष्य से कहा–

एक कागज लो, और लिखो–

विक्रम संवत ११६६ मगसर वदि ४ को कुमारपाल का राज्याभिषेक होगा।

आचार्यश्री नें एक कागज कुमारपाल को दिया एक महामंत्री उदयन को।

कुमारपाल गद्‌गद्‌ होकर बोला–

गुरुदेव ! यदि आपका कथन सच होगा तो मैं पूरा राज्य आपके चरणों में समर्पित कर दूँगा। आप ही राजाधिराज बनेंगे।

वत्स ! जैन संत न तो राज्य लेते हैं और न ही राजा बनते हैं। हाँ, तुम जब राजा बनो; जैनधर्म को दुनियाँ में फैलाना और घर-घर अहिंसा धर्म का पालन करवाना।

फिर हेमचन्द्राचार्य ने महामंत्री उदयन से कहा–

मंत्रिवर ! इस विपत्ति के समय आप कुमार की सहायता कीजिए।

मंत्री उदयन कुमारपाल को अपने घर ले आया। स्नान और भोजन करके कुमारपाल ने कहा–

मंत्रिवर ! आज महीनों बाद स्नान किया है और कई दिनों बाद पेट भर भोजन मिला है। अब विश्राम करना चाहता हूँ।

अवश्य कुमार, तुम यहाँ सुरक्षित हो।

कुमारपाल मंत्रीवर की हवेली के भूमिगृह में छुपकर रहने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन सिद्धराज के गुप्तचर सैनिक घूमते हुए महामंत्री की हवेली पर आ गये–

महाराज का आदेश मिला है कि कुमारपाल खंभात में कहीं छिपा है। इसलिए खंभात का चप्पा-चप्पा छान लो।

महाराज की आज्ञा का पालन करो और घर-घर की तलाशी लो।

सैनिक महामंत्री का घर छोड़कर घर-घर की तलाशी लेने निकल पड़े।

महामंत्री रात के समय कुमारपाल को आचार्यश्री के पास ले आये। सारी स्थिति समझाई। आचार्यश्री उसे अपने साथ एक भूमि गृह ले गये।

कुमार, इस तलघर में उतर जा।

फिर दरवाजा बन्द कर उसके चारों तरफ ग्रन्थों का ढेर लगा दिया।

गुप्तचर खोजते-खोजते उपाश्रय में भी आये।

यहाँ तो कोई नहीं है।

बहुत खोजा, परन्तु कुमारपाल का पता नहीं पा सके।

कुछ दिनों बाद महामंत्री उदयन ने कुमारपाल को आवश्यक धन आदि देकर कहा–

कुमार ! अभी उचित समय है, तुम दूर, बहुत दूर चले जाओ।

कुमारपाल वहाँ से जंगलों में चला गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुत दिनों तक जंगलों की खाक छानने के बाद एक दिन कुमारपाल अपनी बहन प्रेमलदेवी से मिलने पाटन आया। उसके बहनोई कृष्णदेव पाटन के सेनानायक थे। उन्होंने कुमारपाल से कहा–

सात दिन बाद सिद्धराज की मृत्यु हो गई और मन्त्रियों ने मिलकर महान सत्वशाली कुमारपाल को गुजरात का राजा बना दिया।#

कुछ दिनों बाद आचार्य हेमचन्द्र सूरि पाटन पधारे। महाराज कुमारपाल को सूचना मिली तो उन्होंने महामंत्री उदयन को कहा–

विक्रम संवत ११९९ मगसर वदि ४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारपाल भक्तिपूर्वक हेमचन्द्राचार्य के दर्शनों के लिए गया। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलक रहे थे। उसने निवेदन किया–

राजा कुमारपाल संस्कारों से शिवभक्त था। आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरि के सम्पर्क से उसके मन में अहिंसा और जिन भक्ति की भावना जगी। आचार्यश्री के उदार जन कल्याणकारी विचारों से वह बहुत प्रभावित था। साथ ही उनकी यौगिक शक्तियों से अनेक विकट समस्याओं का समाधान भी हुआ और उनकी परम निस्पृहता से राजा उनके प्रति अनन्य आस्थावान बन गया। अपने कल्याण का मार्ग पूछने पर आचार्यश्री ने उसे दो ही मार्ग बताये। एक जिन-भक्ति का दूसरा अहिंसा पालन का। जिन भक्ति से प्रेरित होकर राजा ने अपार द्रव्य खर्च करके अनेक भव्य नयनाभिराम मन्दिरों का निर्माण कराया। पाटण शहर में उसने एक अतीव भव्य जिन मन्दिर बनवाया जिसमें नेमिनाथ भगवान की सौ इंच ऊँची प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्यश्री हेमचन्द्र सूरि के हाथों से सम्पन्न करवाई। राजा ने अपने पिता की स्मृति को जोड़ते हुए इस मन्दिर का नाम 'त्रिभुवनपाल चैत्य' रखा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन राजा कुमारपाल राजसभा में बैठा था, तभी देवपत्तन के पुजारी वहाँ आये। उन्होंने अभिवादन करके निवेदन किया–

महाराज, सोमनाथ महादेव का प्राचीन काष्ट मन्दिर बहुत जीर्ण हो गया है। उसका जीर्णोद्धार आवश्यक है।

यह पुण्य कार्य हम अवश्य करेंगे। आप निश्चिंत रहें।

पुजारियों को वस्त्र, आभूषण से सम्मानित कर राजा ने विदा करके फिर अधिकारियों को बुलाया–

सोमनाथ महादेव मन्दिर का जीर्णोद्धार शीघ्र होना चाहिए।

अधिकारी मन्दिर के निर्माण कार्य में जुट गये।

कुमारपाल एक दिन हेमचन्द्रसूरि के पास बैठा चर्चा कर रहा था–

गुरुदेव, दो वर्ष हो गये, मन्दिर का निर्माण कार्य आगे नहीं बढ़ रहा है। ऐसा उपाय बतायें कि यह शुभ कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाये।

राजन् ! किसी महान् कार्य के लिए कुछ न कुछ व्रत, संकल्प करना होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only . www.jainelibrary.org

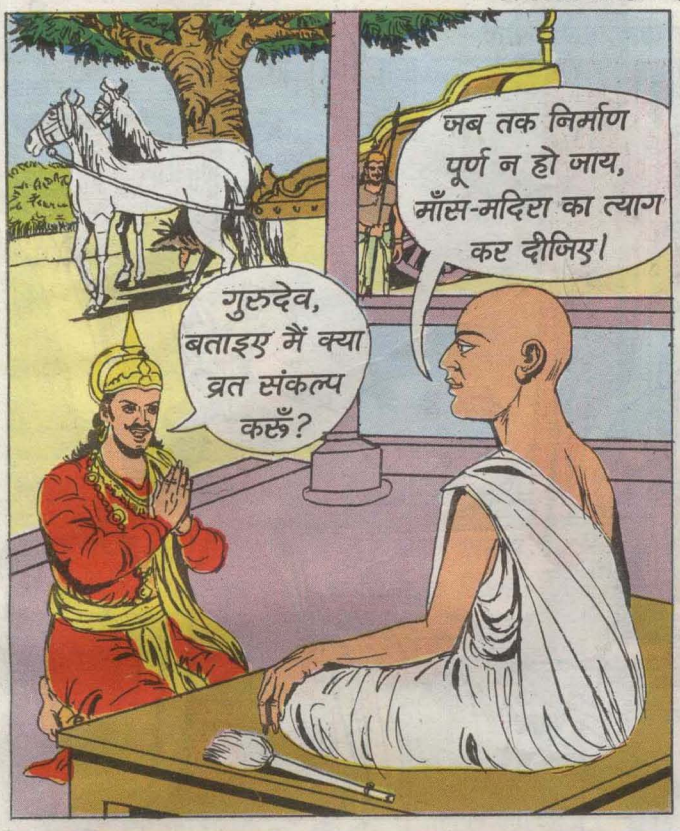

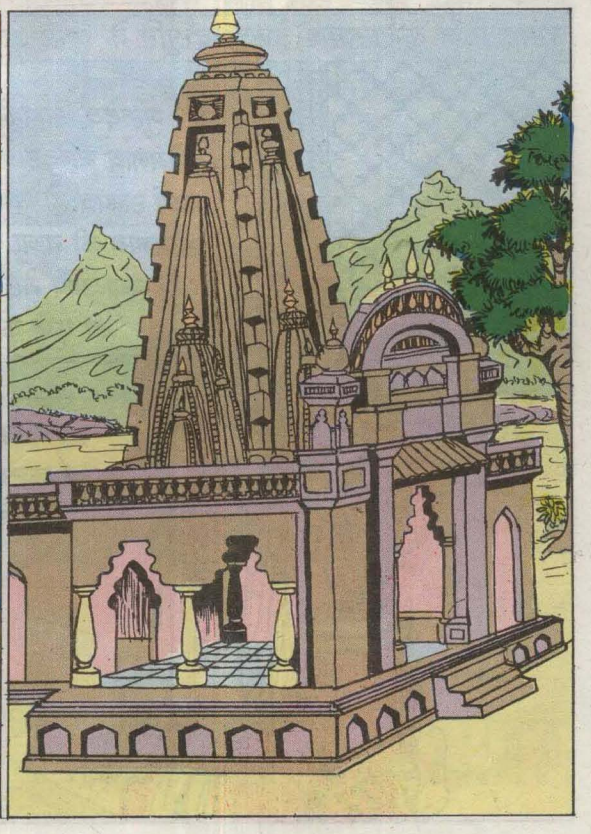

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ ईर्ष्यालु पंडित आचार्यश्री की प्रशंसा सुनकर जल उठे। बोले–

महाराज, आप जिनको अपना गुरु मानते हैं, वे आपके भगवान का दर्शन भी नहीं करेंगे, ना ही सोमनाथ को हाथ जोड़ेंगे।

ठीक है, मैं देखूँगा।

दूसरे दिन कुमारपाल हेमचन्द्रसूरि के पास आया–

गुरुदेव, आपकी कृपा से सोमनाथ मन्दिर के निर्माण का कार्य सम्पन्न हो गया है। अब मैं सोमनाथ की यात्रा करना चाहता हूँ। क्या आप मेरे साथ चलने की कृपा करेंगे।

राजन् ! तीर्थयात्रा करना तो सौभाग्य की बात है। हम अवश्य चलेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारपाल ने पूछा–

गुरुदेव, आपकी सेवा में पालकी, रथ आदि भिजवा दूँ?

नहीं ! पदयात्रा करना हमारा आचार है। हाँ, हम शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ की यात्रा करते हुए देवपत्तन में आपसे मिल लेंगे।

आचार्यश्री तीर्थ-दर्शन करते हुए ठीक समय पर देवपत्तन पहुँच गये। पूजा प्रतिष्ठा के दिन वहाँ के प्रमुख राजपुरोहित भाव वृहस्पति ने निवेदन किया–

आचार्यश्री, आप भी भगवान सोमनाथ की स्तुति कीजिए।

अवश्य

हेमचन्द्रसूरि ने तुरन्त बनाये श्लोकों से महादेव की स्तुति की–

जिसने महाराग, महाद्वेष, महामोह रूपी महामल्ल और कषायों# को जीत लिया है वह महादेव हैं।

महारागो महाद्वेषो महामोह स्तथैवच।
कषायश्च हतो येन महादेवः स उच्यते॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर भाव-विभोर होकर मधुर स्वर में गाने लगे–

जिसने जन्म-मरण के बीज राग आदि को नष्ट कर दिया है। वह चाहे ब्रह्मा हो, विष्णु, महादेव या जिन हो मैं उनकी वन्दना करता हूँ।#

वाह ! गुरुदेव ! क्या सुन्दर स्तुति की है आपने।

पूजा सम्पन्न कर राजा आचार्यश्री के साथ मन्दिर के गर्भगृह में आया। चरणों के पास बैठकर बोला–

महादेव के समान उत्तम देव, आपके समान उत्तम गुरु और मेरे समान तत्त्व जिज्ञासु–तीनों यहाँ उपस्थित हैं। आज मुझे यह बताइए सच्चे देव कौन हैं? और सच्चा धर्म क्या है?

आचार्यश्री कुछ देर ध्यानस्थ हो गये। फिर आँखें खोलकर बोले–

मैं तुम्हें इन्हीं देव के प्रत्यक्ष दर्शन करवाकर जिज्ञासा का समाधान कराता हूँ। मैं ध्यान करता हूँ। तुम धूप डालते रहना।

आचार्यश्री ध्यान समाधि में स्थिर हो गये। पूरा गर्भगृह धुएँ के बादलों से भर गया। दीपक बुझ गये, अँधकार छा गया। तभी ज्योतिर्लिंग में से साक्षात् शिवशंकर प्रकट हुए। प्रकाश चारों तरफ जगमगा उठा।

भव बीजांकुर जनना रागाद्याः क्षय मुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा महेश्वरो वा नमस्तस्मै॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा विभोर होकर शिवशंकर के दिव्य रूप का दर्शन करता रहा। फिर एक दिव्य वाणी गूँजी–

शिवशंकर अदृश्य हो गये। राजा ने आँखें खोलीं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस यात्रा के बाद आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरि के प्रति सम्राट् कुमारपाल की गहरी श्रद्धा जम गई। उसने आचार्यश्री से निवेदन किया–

आपने माँस, मदिरा त्याग का संकल्प कराया जिसके कारण मेरे सब रुके हुए कार्य पूरे हो गये। अब मैं जीवन भर के लिए माँस, मदिरा का त्याग करना चाहता हूँ और अज्ञानवश अब तक माँस भक्षण का पाप किया है उसका प्रायश्चित्त भी।

राजन् ! पापों से मुक्त होने के लिए बत्तीस जिनालयों का निर्माण करवाओ।

आचार्यश्री के मार्गदर्शन से कुमारपाल ने तीर्थंकर के २४ मन्दिर तथा श्रुत देवी आदि के कुल ३२ मन्दिरों का निर्माण करवाया।

एक दिन कुमारपाल ने वाग्भट्ट मंत्री से कहा–

हमारे पूरे राज्य में माँस, मदिरा आदि बुराइयों को मिटा देना चाहिए। इन बुराइयों के प्रति जनता के मन में नफरत जगाओ।

मंत्री ने सात पुतले बनवाकर एक विचित्र जुलूस निकाला। यह विचित्र जुलूस देखकर सैकड़ों लोगों ने इन वृत्तियों का त्याग किया।

१. माँसाहार करने वालों को
२. शराब पीने वालों को
३. जुआरियों को
४. शिकार करने वालों को
५. चोरी करने वालों को
६. स्त्रियों को सताने वालों को
७. लड़कियों के सौदागरों को

देश से निकालो

देश से निकालो

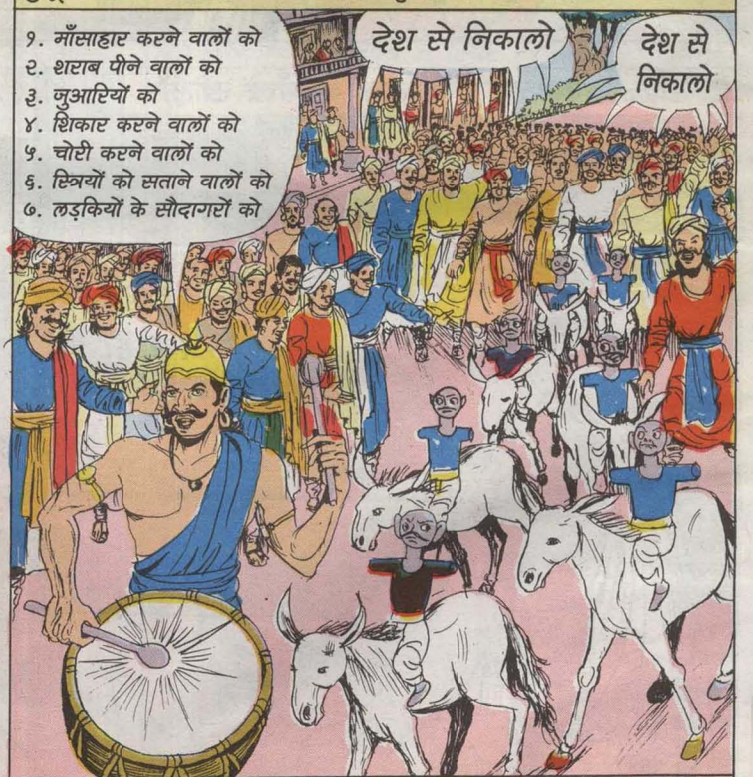

आचार्यश्री के आशीर्वाद से गुजरात की समृद्धि का विस्तार करते हुए कुमारपाल ने अहिंसा धर्म के प्रचार में जो योगदान किया उसका सजीव चित्रांकन अगले भाग में पढ़िये–

क्रमशः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के प्रकाशनों की सूची

क्रमांक	कृति नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1.	कल्पसूत्र सचित्र	सं. म. विनयसागर	200.00
2.	राजस्थान का जैन साहित्य	सं. म. विनयसागर	50.00
3.	प्राकृत स्वयं शिक्षक	डॉ. प्रेमसुमन जैन	15.00
4.	आगम तीर्थ	डॉ. हरिराम आचार्य	10.00
5.	स्मरण कला	अ. मोहन मुनि	15.00
6.	जैनागम दिग्दर्शन	डॉ. मुनि नगराज	20.00
7.	जैन कहानियाँ	उ. महेन्द्र मुनि	4.00
8.	जाति स्मरण ज्ञान	उ. महेन्द्र मुनि	3.00
9.	Half a Tale	Dr. Mukund Lath	150.00
10.	गणधरवाद	म. विनयसागर	50.00
11.	Jain Inscriptions of Rajasthan	Ramvallabh Somani	70.00
12.	Basic Mathematics	Prof. L. C. Jain	15.00
13.	प्राकृत काव्य मंजरी	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
14.	महावीर का जीवन सन्देश	काका कालेलकर	20.00
15.	Jain Political Thought	Dr. G. C. Pandey	40.00
16.	Studies of Jainism	Dr. T. G. Kalghatgi	100.00
17.	जैन, बौद्ध और गीता का साधना मार्ग	डॉ. सागरमल जैन	20.00
18.	जैन, बौद्ध और गीता का समाज दर्शन	डॉ. सागरमल जैन	16.00
19-20.	जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	140.00
21.	जैन कर्म-सिद्धान्त का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	14.00
22.	हेम-प्राकृत व्याकरण शिक्षक	डॉ. उदयचन्द जैन	16.00
23.	आचारांग चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
24.	वाक्पतिराज की लोकानुभूति	डॉ. के. सी. सोगानी	12.00
25.	प्राकृत गद्य सोपान	डॉ. प्रेमसुमन जैन	16.00
26.	अपभ्रंश और हिन्दी	डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन	30.00
27.	नीलांजना	गणेश ललवानी	12.00
28.	चन्दनमूर्ति	गणेश ललवानी	20.00
29.	Astronomy and Cosmology	Prof. L. C. Jain	15.00
30.	Not Far From The River	David Ray	50.00
31-32.	उपमिति-भव-प्रपंच कथा	सं. म. विनयसागर	300.00
33.	समणसुत्तं चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
34.	मिले मन भीतर भगवान	विजयकलापूर्ण सूरि	30.00
35.	जैन धर्म और दर्शन	गणेश ललवानी	9.00
36.	Jainism	D. D. Malvania	30.00
37.	दशवैकालिक चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
38.	Rasaratna Samucchaya	Dr. J. C. Sikdar	15.00
39.	नीतिवाक्यामृत (English also)	डॉ. एस. के. गुप्ता	100.00
40.	सामायिक धर्म : एक पूर्ण योग	विजयकलापूर्ण सूरि	10.00
41.	गीतमरास : एक परिशीलन	म. विनयसागर	15.00
42.	अष्टपाहुड चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
43.	Ahimsa	Surendra Bothara	30.00
44.	वज्जालग्ग में जीवन मूल्य	डॉ. के. सी. सोगानी	20.00
45.	गीता चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	30.00
46.	ऋषिभाषित सूत्र (English also)	सं. म. विनयसागर	100.00
47-48.	नाड़ी विज्ञान एवं नाड़ी प्रकाश	जे. सी. सिकदर	30.00
49.	ऋषिभाषित : एक अध्ययन	डॉ. सागरमल जैन	30.00
50.	उववाइय सुत्तं (English also)	अ. गणेश ललवानी	100.00
51.	उत्तराध्ययन चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	25.00
52.	समयसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	16.00
53.	परमात्मप्रकाश एवं योगसार चयनिका	डॉ. के. सी. सोगानी	10.00
54.	Rishibhashit : A Study	Dr. Sagarmal Jain	30.00
55.	अर्हत् वन्दना	म. चन्द्रप्रभसागर	3.00
56.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 1	पं. झाबरमल शर्मा	75.00
57.	आनन्दघन चौबीसी	भंवरलाल नाहटा	30.00
58.	देवचन्द्र चौबीसी सानुवाद	अ. प्र. सज्जनश्री जी	60.00
59.	सर्वज्ञ कथित परम सामायिक धर्म	विजयकलापूर्ण सूरि	40.00
60.	दुःख-मुक्ति : सुख-प्राप्ति	कन्हैयालाल लोढा	30.00
61.	गाथा सप्तशती	अ. डॉ. हरिराम आचार्य	00.00
62.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 1	अ. गणेश ललवानी	100.00
63.	Yogashastra	Ed. Surendra Bothara	100.00
64.	जिनभक्ति	अ. भद्रंकरविजय गणि	30.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

65.	सहजानन्दघन चरियं	भंवरलाल नाहटा	20.00
66.	आगम युग का जैन दर्शन	[illegible]ख मालवणिया	100.00
67.	खरतरगच्छ दीक्षा नन्दी सूची	भंवरलाल नाहटा, म. विनयसागर	50.00
68.	आयार सुत्तं	अ. म. चन्द्रप्रभसागर	40.00
69.	सूयगड सुत्तं	अ. म. ललितप्रभसागर	30.00
70.	प्राकृत धम्मपद (English also)	सं. डॉ. भागचन्द जैन	150.00
71.	नालाडियार (Tamil, Engli	सं. म. विनयसागर	120.00
72.	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	सं. म. विनयसागर	15.00
73.	पुनर्जन्म का सिद्धान्त	डॉ. एस. आर. व्यास	50.00
74.	समवाय सुत्तं	अ. म. चन्द्रप्रभसागर	100.00
75.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	म. चन्द्रप्रभसागर	10.00
76.	जैन साहित्य में श्रीकृष्ण चरित्र	म. राजेन्द्र मुनि शास्त्री	100.00
77.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 2	अ. गणेश ललवानी	60.00
78.	राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द, भाग 2	पं. झाबरमल शर्मा	100.00
79.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 3	अ. गणेश ललवानी	100.00
80.	दादा दत्त गुरु कॉमिक्स	म. ललितप्रभसागर	5.00
81.	भक्तामर [illegible]क दिव्य दृष्टि	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
82.	दादा[illegible] बली	सं. म. विनयसागर	150.00
83.	जिन[illegible]ी (सचित्र)	सं. म. विनयसागर	50.00
84.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 4	अ. गणेश ललवानी	80.00
85.	Saman Suttam, Part 1	Tr. Dr. K. C. Sogani	75.00
86.	Jainism in Andhra Pradesh	Dr. Jawaharlal Jain	450.00
87.	रहनेमि अध्ययन (English also)	सं. डॉ. बी. के. खडबडी	20.00
89.	उपमिति भव प्रपंच कथा (मूल)	सं. विमलबोधिविजय	200.00
90.	मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास	डॉ. मधूलिका वाजपेयी	130.00
91.	उपाध्याय म. देवचन्द्र जीवन, साहित्य और विचार	म. ललितप्रभसागर	100.00
92.	बरसात की एक रात	गणेश ललवानी	45.00
93.	अरिहंत	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	100.00
94.	योग प्रयोग अयोग	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
95.	प्रबन्ध कोश का ऐतिहासिक विवेचन	डॉ. प्रवेश भारद्वाज	100.00
96.	पंचदशी एकांकी संग्रह	गणेश ललवानी	100.00
97.	Jainism in India	Ed. Ganesh Lalwani	100.00
98.	ज्ञानसार सानुवाद (English also)	अ. गणि मणिप्रभसागर	80.00
99.	विज्ञान के आलोक में जीव-अजीव तत्त्व	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	40.00
100.	ज्योति कलश छलके	म. ललितप्रभसागर	40.00
101.	जैन कथा साहित्य : विविध रूपों में	डॉ. जगदीशचन्द्र जैन	100.00
102.	Neelkeshi	Ed. Prof. A Chakravarty	100.00
104.	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र, भाग 5	अ. गणेश ललवानी	120.00
105.	Jain Aachar : Siddhant Aur Swarup	A. Devendra Muni	300.00
106.	नकारात्मक अहिंसा	सं. कन्हैयालाल लोढ़ा	110.00
107.	द्रव्य विज्ञान	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभा	80.00
108.	अस्तित्व का मूल्यांकन	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
109.	दिव्यद्रष्टा महावीर	डॉ. साध्वी दिव्यप्रभा	51.00
110.	जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय	डॉ. सागरमल जैन	100.00
112.	श्री स्वर्णगिरि : जालोर	भंवरलाल नाहटा	60.00
113.	Philosophy and Spirituality of Shrimad Rajchandra	Dr. U. K. Pungalia	180.00
114.	कल्याण मन्दिर (यन्त्र विधान सहित)	डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभा	100.00
115.	सचित्र भक्तामर स्तोत्र	श्रीचन्द सुराना 'सरस'	325.00
116.	Studies in Jainology Prakrit Literature and Languages	Dr. B. K. Khadabadi	300.00
117.	सचित्र पार्श्वकल्याण कल्पतरु	श्रीचन्द सुराना 'सरस'	30.00

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर की चित्रकथाओं की प्रकाशन सूची

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव (अप्राप्य)
3. णमोकार मंत्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथाएँ
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ (अप्राप्य)
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10. करुणानिधान भगवान महावीर
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा (अप्राप्य)
13. सिद्धचक्र का चमत्कार (अप्राप्य)
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. सती अंजना सुन्दरी
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगतगुरु श्री हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का जाल

(प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : 17.00 रुपया मात्र) (पुस्तक क्रमांक 9-10 का मूल्य : 34.00 रुपया मात्र)

पुस्तक-प्राप्ति स्थान— **प्राकृत भारती अकादमी**

3826, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर-302 003 (राज.) फोन : 561876

13-ए, कैलगिरि हॉस्पिटल रोड, मेन मालवीय नगर,
जयपुर-302 017 (राज.) फोन : 524827, 524828

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य के इतिहास में एक नया शुभारम्भ

सचित्र आगम हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ

जैन संस्कृति का मूल आधार है आगम। आगमों के कठिन विषय को सुरम्य रंगीन चित्रों के द्वारा मनोरंजक और सुबोध शैली में मूल प्राकृत पाठ, सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करने का ऐतिहासिक प्रयत्न।

अब तक प्रकाशित आगम

सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र मूल्य 500.00
(भगवान महावीर की अन्तिम वाणी अत्यन्त शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धक जीवन सन्देश।)

सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र मूल्य 500.00
अष्टम अंग। 90 मोक्षगामी आत्माओं का तप-साधना पूर्ण रोचक जीवन वृत्तान्त।

सचित्र ज्ञाता धर्मकथांगसूत्र (भाग 1, 2)
प्रत्येक का मूल्य 500.00
भगवान महावीर द्वारा कथित बोधप्रद दृष्टान्त एवं रूपकों आदि को सुरम्य चित्रों द्वारा सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र कल्पसूत्र मूल्य 500.00
पर्युषण पर्व में पठनीय 24 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र व स्थविरावली आदि का वर्णन। रंगीन चित्रमय।

सचित्र दशवैकालिक सूत्र मूल्य 500.00
जैन श्रमण की सरल आचार संहिता : जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

सचित्र नन्दी सूत्र मूल्य 500.00
ज्ञान के विविध स्वरूपों का अनेक युक्ति एवं दृष्टान्तों के साथ रोचक वर्णन। चित्रों द्वारा ज्ञान के सूक्ष्म स्वरूपों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सचित्र आचारांग सूत्र मूल्य 500.00
जैन धर्म के आचार विचार का आधारभूत शास्त्र। जिसमें अहिंसा, संयम, तप, अप्रमाद आदि विषयों पर बहुत ही सुन्दर विवेचन है। भगवान महावीर की साधना का भी रोचक इतिहास इसमें है।

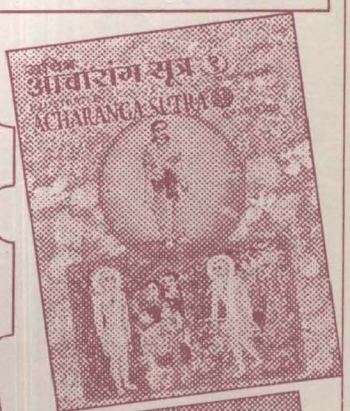

प्रकाशित सचित्र आगमों के
सैट का मूल्य 4,000/-

प्राप्ति स्थान :
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-7, अवागढ़ हाउस, एम. जी. रोड,
आगरा-282002. फोन : (0562) 351165

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरीश्वर जी महाराज का
जीवन निर्माणकारी श्रेष्ठ साहित्य

जीवन सार्थक कैसे हो ?
मानव जीवन को सफल बनाने वाले सात स्वर्ण सूत्र
मूल्य 50.00/- रुपये

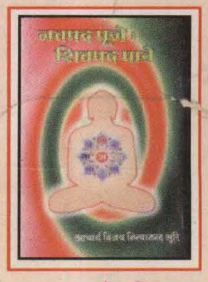

नव पद पूजे शिव पद पावे
नवपद आराधना की महिमा स्वरूप और विधि अत्यन्त रोचक शैली में
मूल्य 100.00/- रुपये

भाव करे भव पार
भाव की महत्ता के साथ बारह भावनाओं पर चिन्तनपरक प्रवचन
मूल्य 100.00/- रुपये

गागर में सागर : लघु में विराट अल्पमोली पॉकेट पुस्तकें

नमस्कार महामंत्र आराधना कैसे करें
मूल्य 10.00/- रुपये

जन कल्याणकारी जैनधर्म
मूल्य 10.00/- रुपये

जीवन शुद्धि का आधार : आत्म शुद्धि
मूल्य 10.00/- रुपये

व्यसन मुक्त जीवन सुखी जीवन
मूल्य 10.00/- रुपये

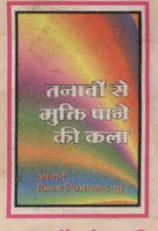

तनावों से मुक्ति पाने की कला
मूल्य 15.00/- रुपये

रंगीन चित्रों के माध्यम से जैन धर्म के युगपुरुषों के जीवन का ऐतिहासिक चित्रण

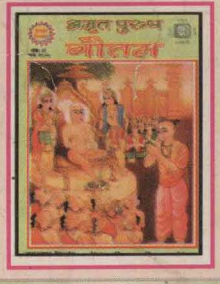

अमृत पुरुष गौतम
मूल्य 21.00/- रुपये

आगमों के प्रथम प्रवक्ता आर्य सुधर्मा
मूल्य 17.00/- रुपये

पूणिया श्रावक
मूल्य 17.00/- रुपये

शीघ्र प्रकाशमान पुस्तकें :

आगम ज्ञान गंगा (चित्रों सहित)

- कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य भाग-1
- हेमचन्द्राचार्य और सम्राट कुमारपाल भाग-2
- महायोगी स्थूलभद्र भाग-1
- महायोगी स्थूलभद्र भाग-2

प्राप्ति स्थान

श्री दिवाकर प्रकाशन
A-7, अवागढ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने,
एम. जी. रोड, आगरा-282 002 फोन : 351165

श्री आत्म-वल्लभ इंटरप्राइजेज
236,/4, इंडस्ट्रियल एरिया, गुप्ता रोड,
लुधियाना-7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org